प्रा क्क थ न

आधुनिक हिन्दी साहित्य की विभिन्न विधाओंमें उपन्यास विधा सर्वाधिक महत्वपूर्ण एवं लोकप्रिय है। यह विधा जीवन और यथार्थ के अत्यंत ही निकट रही है। उपन्यास युग तथा समाज के संदर्भ में बदलते मानव जीवनका व्यापक चित्रा प्रस्तुत करता है। स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यासोंमें भारतीय जीवन को यथार्थ रूपसे प्रस्तुत करनेका प्रयास हुआ है। वर्तमान कालके उपन्यास साहित्यमें दो प्रमुख प्रवृत्तियाँ मिलती हैं। एक साम्यवादपर आधारित सामाजिक यथार्थवादी को और मनोविश्लेषण को। यशपाल के उपन्यासोंमें इन दोनों प्रवृत्तियोंसे युक्त मानवतावादी दृष्टि व्यक्त हुयी है।

यशपालजी आधुनिक हिन्दी गद्य साहित्य के एक सफल और प्रतिष्ठित साहित्यकार है। आधुनिक काल में साहित्य की विभिन्न विधाओंके विकास में उपन्यास यथार्थ जीवन का सच्चा वाहक है।

प्रेरणा :-

एम्. ए. तथा एम्. फिल की परीक्षामें अध्ययन के समय "मृगनयनी" "झूठा-सच-"रंगभूमि", "चित्रलेखा" और 'दिव्या' उपन्यास पढनेका सुअवसर प्राप्त हुआ था। "दिव्या" उपन्यास पढते समय उसके कथ्य तथा शिल्प में नूतन प्रयोगशीलता दिखाई पडी, और इसे जानने की जिज्ञासा मन में निर्माण हुयी। एम्. फिल के समय लघु शोध प्रबंध के लिए "दिव्या" विधा का चुनाव उचित लगा। मेरे मन में "दिव्या" से सम्बन्धित कई प्रश्न उठ खड़े हुए। वे प्रश्न तथा समस्याएँ इस प्रकार हैं -

१] उपन्यासमें ब्राह्मण, बौध्द और मार्क्सवादी विविध विचार धाराओंका संघार्ष।

२] धार्मिक रूढी-परंपरा, अन्धाविश्वास एवं जाति-संघार्ष की शिकार नारी किस प्रकार बनी हुई है।

३] यशपाल नारी जीवन के पारखी होने से आपने नारी जीवन में प्राप्त अनेक रूपोंको प्रस्तुत किया है। ऐसी स्थिति में नारी का निश्चित स्वरूप किस प्रकार होगा ?

४] यशपाल यथार्थ जीवनके भाष्यकार है, भाव और कल्पना के लेखक नहीं। मार्क्सवाद का प्रभाव नारी पात्रोंपर कहाँ तक लक्षित होता है ?

५] नारी जीवनमें प्राचीन और आधुनिक काल में अनेक परिवर्तन हुए। इन सबसे गुजरते हुये नारी के सामने जो समस्याएँ खड़ी हुयी, उनका चित्रण करने में यशपाल कहाँतक सफल हुए ?

६] मार्क्स के साथ-साथ फ्रायड का भी प्रभाव यशपाल पर था। क्या यशपालने नारी पात्रोंका मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करने का प्रयास किया है ?

७] मानव जीवन में प्रवृत्ति और निवृत्ति मार्ग में प्रवृत्ति मार्ग ही श्रेष्ठ किस प्रकार है ?

८] मानव जीवन का विश्लेषण किस प्रकार किया है ?

इन प्रश्नोंका समाधान प्रस्तुत करते समय मैंने यशपालके "दिव्या" उपन्यास का अनुशीलन करनेकी कोशिश की है।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध ४ : अध्यायोंमें विभाजित है :-

प्रथम अध्याय : "यशपाल जीवनी, व्यक्तित्व एवं कृतित्व" में क्रांतिकारी और साहित्यिक व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला गया है।

द्वितीय अध्याय : "हिन्दी का ऐतिहासिक उपन्यास साहित्य" में ऐतिहासिक उपन्यास की पृष्ठभूमि, स्वरूप, महत्व मोद और इतिहास के काल खण्डानुसार ऐतिहासिक उपन्यासोंका वर्गीकरण किया है। यशपालके ऐतिहासिक उपन्यासोंका परिचय दिया है।

तृतीय अध्याय : "दिव्या" उपन्यास की ऐतिहासिकता" में बौध्दकालीन भारत की सामाजिक, राजनीतिक एवं धार्मिक परिस्थितियोंका विश्लेषणात्मक अध्ययन किया है। ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के रूपमें देशकाल वातावरण को ऐतिहासिक परिस्थितियों से प्राप्त सत्य तथ्योंको तिलांजना करनेका प्रयास किया है।

चतुर्थ अध्याय : "दिव्या" उपन्यास की कथावस्तु" में ब्राहमण, बौध्द और मार्क्सवादी विचारधारा का संघर्ष, नारी की विभिन्न समस्याओंको स्पष्ट किया है।

पंचम अध्याय : "दिव्या" के पात्र " में प्रत्येक पात्र के व्यक्तित्वके विभिन्न पहलुओंपर प्रकाश डाला है।

षष्ठ अध्याय : "दिव्या" उपन्यास का उद्देश्य" में धार्मिक रूढी परंपरा, मानव-जीवन का विश्लेषण

जीवन इहलोक, आत्मनिर्भरता और नारी जातीकीभिन्न-भिन्न समस्याओंको चित्रित किया गया है।

उपसंहार :

इस शीर्षक के अन्तर्गत "दिव्या" के अनुशीलन के निष्कर्षों को प्रस्तुति एवं उसके अनुसन्धानसे प्राप्त उपलब्धियाँ तथा अनुसंधान की नयी दिशा की ओर संकेत किया है।

परिशिष्ठ :

इस प्रबंध के अंत में एक परिशिष्ट जोड दिया है।
प्रथम : यशपाल : रचना संसार

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

प्रबन्ध के अन्त में सन्दर्भ ग्रन्थ सूची दी है।

ऋण निर्देश

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध की पूर्ति में मेरी प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष सहायता करनेवाले तथा मुझे समय समय पर प्रोत्साहित करनेवाले गुरुजनों, परिवार के सदस्योंके प्रति कृतज्ञता प्रकट करना मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ । जिनकी रचनाओंका प्रयोग मैंने सहायक ग्रंथोंके रूप में किया है उनके प्रति भी कृतज्ञता प्रकट करता हूँ ।

यह लघु-शोध प्रबंध श्रध्देय, गुरुवर्य प्राचार्य नेमिनाथ बलवंत गुंडे, एम. ए. मान्द प्राध्यापक, स्नातकोतर हिन्दी विभाग, श्रीमती कस्तुरबाई वालचंद महाविद्यालय, सांगली शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापूर के उदार एवं प्रतिभाशाली व्यक्तित्व के आत्मीय एवं प्रेरक निर्देशन का फल है। उन्होंने अपनी कार्य व्यस्तता के बावजूद भी समय-समय पर मेरे लेखन की त्रुटियों को दूर करके मुझे सही दिशा में मार्गदर्शन किया। उनके प्रति अपनी कृतज्ञता शब्दोमें प्रकट करना मेरे लिए संभव नहीं है। उनकी धर्मपत्नी सौ. देवयानी गुंडेजी तथा परिवारके सभी[सदस्योंने] व्यक्तियोंने मेरे साथ आत्मियता का भाव प्रदर्शित करके मुझे लेखन कार्य में प्रोत्साहित किया। मैं उनके प्रति सदैव कृतज्ञ रहुंगा ।

शिवाजी विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष, डॉ. पी. एस. पाटील से मुझे प्रस्तुत अध्ययन में मौलिक मार्गदर्शन प्राप्त हुआ है। साथ ही प्रा. डॉ. अर्जुन चव्हाण से भी मौलिक मार्गदर्शन प्राप्त हुआ है। तथा श्रध्देय, गुरुवर्य डॉ. वसंत केशव मोरेजी ने प्रारंभ से ही मुझे इस शोध

कार्य में प्रोत्साहन दिया है। उनके प्रति मैं कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ ।

इस शोध कार्य में श्रध्देय गुरुवर्य डॉ. सुनीलकुमार लवटे, प्रा. जी. एस. हिरेमठ, डॉ. के. पी. शहा तथा प्रा. दि. मा. भस्मे, प्रा. एम. एम. मुलाणी आदि की सहायता तथा प्रोत्साहन मिला है। इस शोध कार्य में रयत शिक्षण संस्था के कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय, हुपरी के प्राचार्य तथा प्रा. मित्रों का सहयोग मिला। प्रा. मारुफ मुजावर की अंतिम दिनों मे सहायता मिली ।

श्री लोंढे, प्रा. बनसोडे का भी सहयोग मिला। अत: मैं उनके प्रति कृतज्ञ हूँ ।

मेरे आदरणीय, पूज्य पिताश्री श्री. बापूसो सखाराम भोसलेजी से प्रेरणा और पूज्य माताश्री शहाबाईजी की स्नेहमयी ममता सदैव मेरे साथ रहनेसे मैं इस शोध क्षेत्रमें पदार्पण करने का साहस कर सका ।

पूज्यमाता-पिता और मौसी के आशीर्वाद से ही यह शोध कार्य संपन्न हुआ है। अत: मैं उनके ऋण में सदैव रहूँगा ।

मेरे परिवारके अन्य सदस्य - भाई बाबासो, भाभी सौ. लक्ष्मीजी, छोटा भाई नेताजी और पत्नी सौ. मीना, भाई यशवंत तथा चाचा-चाची और बहन सौ. सुशिला, सौ. सिंधुताई और मेरी पत्नी सौ. रंजना, जिन्होंने मुझे प्रस्तुत कार्य में सदैव सक्रिय प्रोत्साहन एवं सहयोग दिया है। उनके प्रति मैं कृतज्ञ हूं।

शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापूर के ग्रंथपाल ए.एस.सी. कॉलिज, इचलकरंजी ग्रंथालय के ग्रंथपाल के प्रति मैं आभार प्रकट करता हूँ ।

अंत में इस लघु-शोध प्रबंध को अत्यंत कम समय में टंकित करनेवाले श्री. राजू मोहिते को हार्दिक धन्यवाद देता हूँ ।

श्री. के. बी. मोसले,
शोधछात्र

कोल्हापूर.

दिनांक - जून १९९५